भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -1 / अंक -1 / जुलाई -2021

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -1 / अंक -1 / जुलाई -2021

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति

शब्द परामर्श
आदित्य विक्रम जी मालीवाल

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

मूल्य
आपका कीमती समय

सम्पर्क सूत्र
www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

सोशल कनेक्शन
हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

❋ जुलाई माह ❋

Saka Calendar- 1943 | Vikram Samvat- 2078 | Ayan- Uttarayan | Ritu- Varsha

01	गुरुवार, आषाढ़, कृष्ण सप्तमी
02	शुक्रवार, कलाष्ठमी आषाढ़, कृष्ण अष्टमी
03	शनिवार, आषाढ़, कृष्ण नवमी
04	रविवार, आषाढ़, कृष्ण दशमी
05	सोमवार, यौगिनी एकादशी व्रत आषाढ़, कृष्ण एकादशी
06	मंगलवार, आषाढ़, कृष्ण द्वादशी
07	बुधवार, प्रदोष व्रत आषाढ़, कृष्ण त्रयोदशी
08	गुरुवार, मासिक शिवरात्री आषाढ़, कृष्ण चतुर्दशी
09	शुक्रवार, आषाढ़, कृष्ण चतुर्दशी व अमावस्या
10	शनिवार, आषाढ़, कृष्ण अमावस्या
11	रविवार, गुप्त नवरात्री आरंभ आषाढ़, शुक्ल प्रतिपदा
12	सोमवार, श्री जगन्नाथ रथ यात्रा आषाढ़, शुक्ल द्वितीया
13	मंगलवार, आषाढ़, शुक्ल तृतीया
14	बुधवार, विनायक चर्तुथी आषाढ़, शुक्ल चर्तुथी
15	गुरुवार, आषाढ़, शुक्ल पंचमी
16	शुक्रवार, स्कंध षष्ठी आषाढ़, शुक्ल षष्ठी
17	शनिवार, विवस्वान सप्तमी आषाढ़, शुक्ल सप्तमी
18	रविवार, भढली नवमी, नवरात्री समाप्त, आषाढ़, शुक्ल नवमी
19	सोमवार, आषाढ़, शुक्ल दशमी
20	मंगलवार, देवशयनी एकादशी व्रत आषाढ़, शुक्ल एकादशी
21	बुधवार, वसुदेव द्वादशी आषाढ़, शुक्ल द्वादशी
22	गुरुवार, प्रदोष व्रत आषाढ़, शुक्ल त्रयोदशी
23	शुक्रवार, कोकिला व्रत आषाढ़, शुक्ल चतुर्दशी
24	शनिवार, गुरु पूर्णिमा आषाढ़, पूर्णिमा
25	रविवार, चर्तुमास आरंभ श्रावण, कृष्ण प्रतिपदा
26	सोमवार, श्रावण सोमवार व्रत श्रावण, कृष्ण तृतीया
27	मंगलवार, संकष्टी चर्तुथी व्रत श्रावण, कृष्ण चर्तुथी
28	बुधवार, श्रावण, कृष्ण पंचमी
29	गुरुवार, श्रावण, कृष्ण षष्ठी
30	शुक्रवार, श्रावण, कृष्ण सप्तमी
31	शनिवार, कलाष्ठमी श्रावण, कृष्ण अष्टमी

❋गुप्त नवरात्रि❋

जुलाई - 11, 2021 से - 18, 2021 तक

हिंदू धर्म में नवरात्रि त्यौहार का विशेष महत्व होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गुप्त नवरात्रि का भी विशेष महत्व जिसे तंत्र-मंत्र को सिद्ध करने वाली मानी गई है। गुप्त नवरात्रि के नौ दिन तक माँ दुर्गा की विधि-विधान से पूजा की जाती है। गुप्त नवरात्रि में सात्विक और तांत्रिक दोनों तरीके से पूजा की जाती है। जिसमे मुख्य रूप से साधुओं, तांत्रिकों द्वारा माँ दुर्गा को प्रसन्न, शक्ति साधना, महाकाल और तंत्र साधना के लिए मनाया जाता है। मान्यता है कि गुप्त नवरात्रि में माँ दुर्गा की पूजा को गुप्त रखा जाता है, इससे पूजा का फल दोगुना मिलता है।

माँ दुर्गा के इन स्वरूपों की होती है पूजा -

प्रतिपदा 11

घट स्थापना,
माँ शैलपुत्री पूजा

द्वितीया 12

माँ ब्रह्मचारिणी पूजा

तृतीया 13

माँ चन्द्रघंटा पूजा

चतुर्थी 14

माँ कुष्माण्डा पूजा

पँचमी 15

माँ स्कन्द माता पूजा

षष्ठी 16

माँ कात्यायनी पूजा

सप्तमी 17

माँ कालरात्री पूजा

नवमी 18

माँ सिद्धिदात्री पूजा,
नवरात्रि पारण

❋जगन्नाथ रथ यात्रा❋

जुलाई - 12, 2021

उत्कल प्रदेश के प्रधान देवता श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया को जगन्नाथपुरी में आरम्भ होती है और शुक्ल पक्ष की एकादशी को रथयात्रा का समापन होता है। पुरी पूर्वी भारत के उड़ीसा (ओडिशा) प्रान्त में है जिसे पुरुषोत्तम पुरी, शंख क्षेत्र, श्रीक्षेत्र, शाक क्षेत्र, नीलांचल, नीलगिरि के नाम से भी जाना जाता है| जो प्रभु श्री जगन्नाथ जी की मुख्य लीला-भूमि है। श्री जगन्नाथ जी पूर्ण परात्पर भगवान है और श्रीकृष्ण उनकी कला का ही एक रूप माने जाते है इसलिए पुरी स्थित जगन्नाथ जी का मंदिर भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार को समर्पित है। वैष्णव धर्म के अनुसार श्री जगन्नाथ जी राधा रानी और श्रीकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रतीक है| रथयात्रा में भगवान विष्णु के दशावतारों की पूजा होती है|

शास्त्रों के अनुसार रथयात्रा की शुरुआत बहन सुभद्रा के द्वारिका नगर भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्देश्य से हुई थी|

तब बहन सुभद्रा, श्रीकृष्ण व बलराम तीनो अलग - अलग रथों में बैठकर अपनी मौसी के घर जनकपुर गए थे| तब से आज तक प्रति वर्ष भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा के साथ हर साल अपनी मौसी के घर जाते हैं। आज भी तीनों की मूर्तियों को पुरी के जगन्नाथ मंदिर से रथ पर सवार करके उनकी मौसी के घर यानी गुंडीचा मंदिर ले जाया जाता है।

रथ की विशेषता -

- कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथजी की रथयात्रा का पुण्य सौ यज्ञों के समान होता है। रथयात्रा एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ अपने भक्तों के बीच आते हैं और उनके दु:ख-सु:ख में सहभागी होते हैं।

- भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के लिए हर साल 3 रथ बनाए जाते हैं, जिनकी तैयारी बसंतपंचमी से शुरू हो जाती है। तीनों रथ नारियल और नीम की पवित्र एवं परिपक्व काष्ठ (लकड़ियों) से तैयार किये जाते हैं, जिसे **‘दारु’** कहते हैं। रथ बनाने में सिर्फ लकड़ियां ही इस्तेमाल की जाती हैं, कोई धातु जैसे कील आदि नहीं लगाई जाती है। रथ बनाने वाले सेवक को **"गरबाड़ु"** कहा जाता है।

- तीनों रथों में पहिये से लेकर शिखर के ध्वजदंड तक 34 अलग-अलग हिस्से होते हैं। रथों के निर्माण में तक़रीबन हजारों क्यूबिक फीट लकड़ीयो का इस्तेमाल होता है। यह लकड़ी नयागढ़, खुर्दा, बौध इलाके के वनों से हजारों पेड़ों को काटकर लायी जाती है। इसके लिए इससे दोगुने पौधे भी लगाए जाते हैं।

- जब तीनों रथ तैयार हो जाते हैं, तब **"छर पहनरा"** नामक एक अनुष्ठान किया जाता है। जिसमे पुरी के गजपति राजा पालकी में यहां आते हैं और इन तीनों रथों की विधिवत पूजा करते हैं| **"सोने की झाड़ू"** से रथ मण्डप और रास्ते को साफ़ करते हैं।

- रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा तीनों अलग-अलग रथों पर सवार होते हैं। जिसमे सबसे आगे बलराम का रथ **"ताल ध्वज"** जिसका रंग लाल और हरा होता है, फिर बहन सुभद्रा का रथ **"दर्पदलन"** या **"पद्म ध्वज"** जो काले या नीले और लाल रंग का होता है और सबसे पीछे भगवान जगन्नाथ का रथ **"नन्दीघोष"** या **"गरुड़ध्वज"** चलता है। जिसका रंग लाल और पीला होता है। रथों को उनके रंग और ऊंचाई से आसानी से पहचाना जा सकता है।

- भगवान जगन्नाथ का नन्दीघोष रथ तकरीबन 45.6 से 65 फीट ऊंचा और चौड़ा होता है, जिसमें 7 फीट व्यास के 18 पहिये होते है, बलराम का तालध्वज रथ और देवी सुभद्रा का दर्पदलन रथ नन्दी घोष से छोटा होता है, जिसमे 16 और 14 पहिये लगे होते है।

- आषाढ़ माह की शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को रथयात्रा आरम्भ होती है। ढोल, नगाड़ों, तुरही, शंखध्वनि और जयनाद के बीच भक्तगण इन रथों को रस्सी से खींचते हैं। माना जाता हैं कि रथ खींचने वाले महाभाग्यवान होते है और जीवन मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती एवं उनको मोक्ष की प्राप्ति होती है।

- भगवान जगन्नाथ के लिए पूरी के जगन्नाथ मंदिर में **752 चूल्हों** पर प्रसाद बनाया जाता है| इसलिए यह दुनिया की सबसे बड़ी रसोई का रूप है| रथयात्रा के नौ दिनो तक के उत्सव में यहां के चूल्हे जलाये नही जाते हैं तब सारा भोग गुंडिचा मंदिर में बनाया जाता है| वहाँ भी पुरी मंदिर के समान 752 चूल्हों की ही रसोई है|

- भगवान जगन्नाथपुरी की यह लोकप्रिय रथयात्रा उत्सव जगन्नाथपुरी के अलावा भारत के कुछ प्रांतो जैसे - गुजरात, असम, जम्मू, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, अमृतसर, भोपाल, बनारस और लखनऊ में भी मनाया जाने लगा है। इसके अलावा बांग्लादेश, सैन फ्रांसिस्को और लंदन आदि देशो में भी रथयात्रा निकाली जाने लगी है।

बबीता जी पोद्दार

‘हमारी धरोहर - हमारी परम्परा’

अनमोल, अनुपम, अदभुत विरासत है,
भारतीय परम्परा।
संस्कारो की उत्कृष्ट अमानत का उद्गम है,
भारतीय परम्परा।
उपमा की उज्ज्वल ऊँचाई लिये हुए है,
भारतीय परम्परा।
उन्नति के पथ पर निरन्तर अग्रसर करवाती है,
भारतीय परम्परा।
उज्ज्वलता का बोध करवाकर आगे बढ़ाती है,
भारतीय परम्परा।
मज़बूत जड़ो से ऊँची उड़ान भरवाती है,
भारतीय परम्परा।
भगवान की छवि को आभूषण से आलोकित दिखाती है,
भारतीय परम्परा।
तभी तों प्राचीन साहित्य की अनोखी अभिव्यक्ति करती है,
भारतीय परम्परा।
अविस्मरणीय, अकल्पनीय इतिहास लिये हुए है,
भारतीय परम्परा।
महान धरोहर है हमारे भारत की महान परम्परा।

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परंपरा

‘की माला में पिरोना’

चाहते है तो हमें

सम्पर्क करें!

paramparabhartiya@gmail.com

आपका लेख वेबसाईट पर भी
प्रकाशित किया जाएगा।

कहानी सार

मोहन बेटा ! मैं तुम्हारे काका के घर जा रहा हूँ|

क्यों पिताजी?
और आप आजकल काका के घर बहुत जा रहे हो ...?
आपका मन मान रहा हो तो चले जाओ ... पिताजी !!! लो ये पैसे रख लो, काम आएंगे|

पिताजी का मन भर आया, उन्हें आज अपने बेटे को दिए गए संस्कार लौटते नजर आ रहे थे|

जब मोहन स्कूल जाता था ... वह पिताजी से जेब खर्च लेने में हमेशा हिचकता था, क्यों कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी| पिताजी मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से घर चला पाते थे ... पर माँ फिर भी उसकी जेब में कुछ सिक्के डाल देती थी ... जबकि वह बार - बार मना करता था|

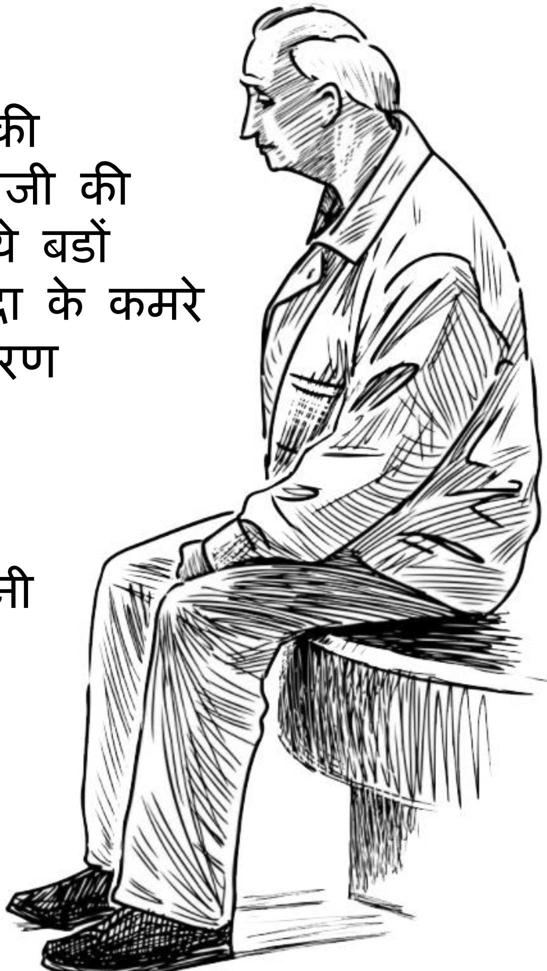

मोहन की पत्नी का स्वभाव भी उसके पिताजी की तरफ कुछ लगाव वाला नहीं था| वह रोज पिताजी की आदतों के बारे में कहासुनी करती थी ... उसे ये बडों से टोका टाकी पसन्द नही थी ... बच्चे भी दादा के कमरे में नहीं जाते, मोहन को भी देर से आने के कारण बात करने का समय नहीं मिलता|

एक दिन मोहन ने पिताजी का पीछा किया... आखिर पिताजी को काका के घर जाने की इतनी जल्दी क्यों रहती है? वह यह देख कर हैरान रह गया कि पिताजी तो काका के घर जाते ही नहीं हैं !!!

वह तो स्टेशन पर एकान्त में शून्य एक पेड़ के सहारे घंटों बैठे रहते है| तभी पास खड़े एक बजुर्ग, जो यह सब देख रहे थे, उन्होंने कहा ... बेटा...! क्या देख रहे हो?

जी....! वो...

अच्छा, तुम उस बूढ़े आदमी को देख रहे हो....? वो यहाँ अक्सर आते हैं और घंटों पेड़ तले बैठ कर सांझ ढले अपने घर लौट जाते हैं| किसी अच्छे सभ्रांत घर के लगते हैं|

बेटा ...! ऐसे एक नहीं अनेकों बुजुर्ग माता, बुजुर्ग पिता तुम्हें यहाँ आसपास मिल जाएंगे!!
जी, मगर क्यों?

बेटा ...! जब घर में बड़े बुजुर्गों को प्यार नहीं मिलता.... उन्हें बहुत अकेलापन महसूस होता है, तो वे यहाँ वहाँ बैठ कर अपना समय काटा करते हैं!

वैसे क्या तुम्हें पता है.. बुढ़ापे में इन्सान का मन बिल्कुल बच्चे जैसा हो जाता है| उस समय उन्हें अधिक प्यार और सम्मान की जरूरत पड़ती है, पर परिवार के सदस्य इस बात को समझ नहीं पाते|

वो यही समझते हैं कि इन्होंने अपनी जिंदगी जी ली है फिर उन्हें अकेला छोड देते हैं| कहीं साथ ले जाने से कतराते हैं| बात करना तो दूर अक्सर उनकी राय भी उन्हें कड़वी लगती है | जब कि वही बुजुर्ग अपने बच्चों को अपने अनुभवों से आने वाले संकटों और परेशानियों से बचाने के लिए सटीक सलाह देते है|

घर लौट कर मोहन ने किसी से कुछ नहीं कहा| जब पिताजी लौटे, मोहन घर के सभी सदस्यों को देखता रहा|

किसी को भी पिताजी की चिन्ता नहीं थी| पिताजी से कोई बात नहीं करता, कोई हंसता खेलता नहीं था| जैसे पिताजी का घर में कोई अस्तित्व ही न हो! पत्नी और बच्चे सभी किसी का भी ध्यान पिताजी तरफ नहीं था!

सबको सही राह दिखाने के लिऐ आखिर मोहन ने भी अपनी पत्नी और बच्चों से बोलना बन्द कर दिया ... वो काम पर जाता और वापस आता किसी से कोई बातचीत नही ...! बच्चे एवं पत्नी बोलने की कोशिश भी करते, तो वह भी उनकी तरफ ध्यान नहीं देता और अपने काम मे डूबे रहने का नाटक करता!!! तीन दिन मे सभी परेशान हो उठे... पत्नी, बच्चे इस उदासी का कारण जानना चाहते थे|

मोहन ने अपने परिवार को अपने पास बिठाया| उन्हें प्यार से समझाया कि मैंने तुम से चार दिन बात नहीं की तो तुम कितने परेशान हो गए ? अब सोचो तुम पिताजी के साथ ऐसा व्यवहार करके उन्हें कितना दुख दे रहे हो?

मेरे पिताजी मुझे जान से प्यारे हैं और फिर पिताजी के अकेले स्टेशन जाकर घंटों बैठकर रोने की बात की छुपा लिया| सभी को अपने बुरे व्यवहार का खेद था|

उस दिन जैसे ही पिताजी शाम को घर लौटे, तो बच्चे उनसे चिपट गए ...! दादा जी!!! आज हम आपके पास बैठेंगे...! कोई किस्सा कहानी सुनाओ ना|

पिताजी की आँखें भीग आई| वो बच्चों को लिपटकर उन्हें प्यार करने लगे और फिर जो किस्से कहानियों का दौर शुरू हुआ वो घंटों चला| इस बीच मोहन की पत्नी उनके लिए फल तो कभी चाय नमकीन लेकर आती, उनका पूरा ख्याल रखती|

पिताजी बच्चों और मोहन के साथ स्वयं भी खाते और बच्चों को भी खिलाते| अब घर का माहौल पूरी तरह बदल गया था !!!

एक दिन मोहन बोला, पिताजी..! आजकल काका के घर नहीं जा रहे हो.? नहीं बेटा! अब तो अपना घर ही स्वर्ग लगता है ...!!!

आज सभी में तो नहीं, लेकिन अधिकांश परिवारों के बुजुर्गों की यही कहानी है| बहुधा आस पास के बगीचों में, बस अड्डे पर, नजदीकी रेल्वे स्टेशन पर परिवार से तिरस्कृत भरे पूरे परिवार में एकाकी जीवन बिताते हुए ऐसे कई बुजुर्ग देखने को मिल जाएंगे|

आप भी कभी न कभी अवश्य बूढ़े होंगे| आज नहीं तो कुछ वर्षों बाद होंगे| जीवन का सबसे बड़ा संकट है बुढ़ापा ! घर के बुजुर्ग ऐसे बूढ़े वृक्ष हैं, जो बेशक फल न देते हों पर छाँव तो देते ही हैं !

अपना बुढापा खुशहाल बनाने के लिए बुजुर्गों को अकेलापन महसूस न होने दीजिये, उनका सम्मान भले ही न कर पाएँ, पर उन्हें तिरस्कृत मत कीजिये, उनका खयाल रखिये।

आने वाला आपका जीवन भी यहीं दिखायेगा, जो आप आज कर रहे है |

भारतीय परंपरा
की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है| यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें|

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुवे है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है|

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें|

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये|

जीवन एक संसार

"ईन्सानियत
मर रही हैं और
लोग जीना चाहते हैं।"

'निंदा'
से घबराकर अपने
'लक्ष्य'
को ना छोडे क्योंकि
'लक्ष्य'
मिलते ही निंदा
करने वालों की
'राय'
बदल जाती हैं।

'गलती'
पीठ की तरह होती हैं
औरो की दिखती हैं
पर अपनी नहीं।

एक बार अकबर ने बीरबल
से कुछ ऐसा लिखने को कहा
जिसे खुशी में पढो तो गम हो
और गम में पढो तो खुशी हो
'ये वक्त भी निकल जायेगा'

'सम्मान' हमेशा
समय और स्थिती
का होता हैं...
पर इंसान उसे
अपना समझ
लेता हैं !!!

निनाव

(महाराष्ट्रीयन व्यंजन)

सामग्री –

- 2 कप - बेसन,
- 1/2 कप - चावल का आटा,
- 2 टेबलस्पून - शुध्द घी,
- 6-7 इलायची का पाउडर,
- 1/2 जायफल का पाउडर,
- 2 - 1/2 (ढाई) कप - नारियल का दूध,
- आवश्यकतानुसार मेवा कतरन,
- 2 कप - कसा हुआ गुड

विधि –

- दो चम्मच घी कढ़ाई में गर्म करके उसमें बेसन और चावल का आटा धीमी गैस पर गुलाबी होने तक भूने, फिर उसे ठंडा होने दे|
- नारियल का जाडा दूध लेना है और उस में भुना हुआ आटा मिलाना है| मिक्स करतें समय उसमें गांठे (लंम्स) नहीं आनी चाहिए|
- फिर उसमें कसा हुआ गुड़, इलायची पाउडर और जायफल पाउडर डालें और गुड पिघलने तक भूने|
- मिश्रण को धीमी गैस पर अच्छे से पकने दें, मिश्रण के गाढ़ा होने पर गैस बंद करें|
- एक थाली में घी लगाकर रखे उस मिश्रण को थाली में निकाले| ऊपर से मेवा डाल के हल्के हाथ से दबा दें, फिर इसके चौकोर आकार (पिसेस) करके पेश करे|

पूनम जी राठी, गोकुलपेठ, नागपुर|

LUXURIOUS FLATS

- Terrace Garden with Lift accessibility
- Adjoining Jain Derasar
- Gym - Fitness at your doorstep
- Table Tennis - Bring out your inner player
- Library - Increase kids knowledge

WHITE BERRY RESIDENCY

FLAT AREA
(418 - 713 Carpet)
1, 2, 3.5 & 4.5 BHK

WAYS TO REACH US
- On Call Support
- Whatsapp Assistance
- Video Call Assistance
- Virtual Sales Experience

BOOK NOW 98705 80810

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

Logo Design
Graphic Design
Web Design
Mobile App
Animated Video
Digital Marketing

www.mxcreativity.com

Kings wed Queens

WEDDING
- LOGO
- INVITATION
- STATIONERY
- WEBSITE
- MOBILE APP
- Festival Greeting

Create your MEMORIES With Us

www.kingswedsqueens.com

हँसी खुशी के पल

तीन प्रहर की कडक भुख
के बाद जब माँ ने थाली में
'कददू' की सब्जी रखी तो
सब्र का फल मिठा होता हैं
कहावत भी मुझ पर
हँसने लगी।

गर्मी का आलम
ये है कि मिट्टटी
का मटका भी
आधा पानी खुद
ही पी जाता हैं।

खुब कोशिश के
बाद 'मास्क' का
हिंदी अर्थ
मिल गया
'मुख लंगोट'।

इंटरव्यू लेने वाला :
तुम्हे एक्सेल आता हैं ?
पप्पू : हाँ, XL आ तो
जायेगा पर थोडा
ढिला होगा।

एक बार स्कूल में मुझे
जबरदस्ती गाना गाने खडा
कर दिया
मैने भी राष्ट्रगान गा कर
सबको खडा कर दिया

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात गुरु ब्रह्मा, विष्णु और महेश है, परम ब्रह्म के समान माना गया है, ऐसे गुरु को मेरा शत शत नमन ।

भारतीय संस्कृति में गुरु को देवता तुल्य माना जाता है। **आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा का यह पर्व महार्षि वेद व्यास जी के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है।** शिवपुराण के अनुसार अठ्ठाईसवें द्वापर में महर्षि वेदव्यास जी का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा को लगभग 3000 ई. पूर्व में हुआ था। उनके पिता का नाम ऋषि पराशर है । वेद व्यास जी को विष्णु भगवान का अंशावतार माना जाता है । इनको **कृष्णद्वैपायन** के नाम से भी जाना जाता है ।

वेद, उपनिषद और पुराणों का प्रणयन करने वाले महर्षि व्यास जी तीनों कालों के ज्ञाता है। **वेद व्यास जी ने चारों वेदों, ब्रह्मासूत्र, महाभारत सहित 18 पुराणों एवं अन्य ग्रन्थों की भी रचना की जिनमें "श्रीमदभागवतमहापुराण" एक अतुलनीय ग्रंथ भी शामिल है।** शास्त्रों के अनुसार इसी दिन वेद व्यास जी ने अपने शिष्यों एवं मुनियों को सर्वप्रथम श्री भागवतपुराण का ज्ञान दिया था। जिस वजह से उनके अनेक शिष्यों में से पांच शिष्यों ने गुरु पूजा की परंपरा प्रारंभ की। पुष्पमंडप में उच्चासन पर अपने गुरु जी को बिठाकर पुष्प मालाएं अर्पित की, उनकी आरती की तथा अपने लिखे ग्रंथ अर्पित किए । यहीं परम्परा आज भी चली आ रही है, हर साल इस दिन लोग व्यास जी के चित्र का पूजन करते है और उनके द्वारा रचित ग्रंथों का पाठ करते हैं।

कई मठों और आश्रमों में लोग जाकर अपने गुरुओं की पूजा करते हैं और उनसे आशीर्वाद लेते है। **गुरु पूर्णिमा को आषाढ़ पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा और मुडिया पूनो** के नाम से भी जाना जाता है।

वैदिक ग्रंथों के अनुसार भगवान शिव को सर्वप्रथम गुरु माना गया है -

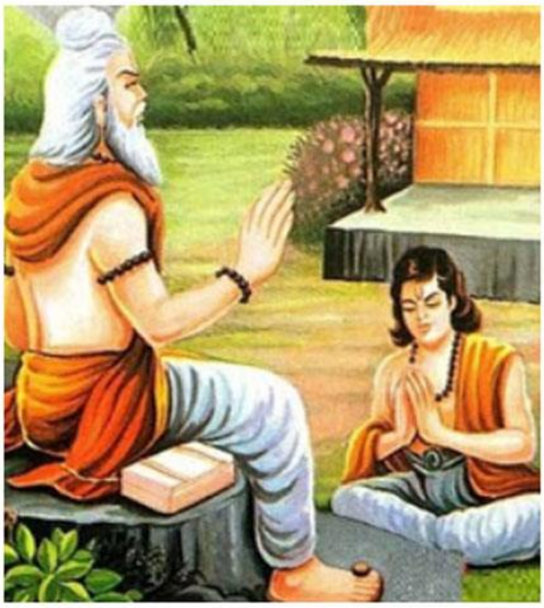

गुरु और शिष्य

पौराणिक तथ्यों के अनुसार, **भगवान शिव सबसे पहले गुरु माने जाते हैं।** शिवजी ने ही सबसे पहले धरती पर सभ्यता और धर्म का प्रचार-प्रसार किया था इसलिए उन्हें **आदिदेव, आदिगुरू और आदिनाथ** भी कहा जाता है। आदिगुरू शिव ने यह कार्य शनि और परशुराम अपने दोनों शिष्यों के साथ 7 ऋषियों को दिया। ये ही आगे चलकर सप्तऋषि (जिनके नाम है- **ऋषि वशिष्ठ, ऋषि विश्वामित्र, ऋषि शौनक, ऋषि वामदेव, ऋषि अत्री, ऋषि भारद्वाज और ऋषि कण्व**) कहलाए और इन्होंने ही आगे चलकर भगवान शिव के ज्ञान को चारों दिशाओं में फैलाया।

गुरु का महत्व:

'गुरु' शब्द का अर्थ ही होता है अंधेरे को खत्म करना, शिष्यों को सही राह दिखाना | गुरू के बिना एक शिष्य के जीवन का कोई अर्थ नहीं होता। सही राह पर चलना यह सीख गुरु ही देता है | गुरु जीवन में से अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाते है। जिसके प्रमाण रामायण और महाभारत में भी मिलते है, जिसमे गुरू का स्थान सबसे महत्वपूर्ण और पूजनीय रहा है। मनुष्य जीवन में गुरु किसी भी स्वरूप में प्राप्त हो सकता है जैसे माता-पिता, शिक्षा देने वाले शिक्षक आदि | आज भी सर्वप्रथम गुरु माँ को माना जाता है |

गुरु की महत्ता को प्रसारित करते हुए ही महान संत कबीरदास जी ने लिखा है-

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाये,
बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो मिलाये।"

यानि एक गुरू का स्थान बहुत बड़ा और पूजनीय होता है। जो प्रभु से मिलने का मार्ग प्रशस्त करते है |

सभी गुरु जनों को सादर प्रणाम |

नवरात्रि आई... खुशियाँ ले

Poetry & Vocals By CA Rukman Ladha

भजन सुनने के लिए आइकन को र्स्पश करें

विश्वास का प्रतिरूप हैं,
वे ज्ञान का भण्डार हैं।
संसार में गुरूदेव स्वयं,
प्रभु का शाश्वत अवतार हैं।।

आदित्य विक्रम जी मालीवाल, चितौड़गढ़, राजस्थान।

BESK (Bharat Education Society, Kurla) bags started as a small initiative by a charitable society's way to improve the lives of village women in the tiny little hamlet of Neral, ahead of Karjat where the society also runs an English school for rural children.

BUY MASKS AND SHOPPING BAGS

आप सभी का

हार्दिक आभार

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

www.bhartiyaparampara.com